विचार बिन्दु

मूर्ख आदमी अपने बड़े से बड़े दोष अनदेखा करता है, किन्तु दूसरे के छोटे से छोटे दोष को देखता है। –संस्कृत सूक्ति

पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से उभरता देश वियतनाम

गत तीन दिन से हम वियतनाम में हैं। गत चार-पांच सालों में भारत से वियतनाम जाने वाले पर्यटकों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। यहां 2019-20 में भारत से लगभग 1 लाख पर्यटक आए थे जबकि 2024 में यह संख्या बढ़कर पांच लाख से अधिक हो गई। जिस गति से वियतनाम के पर्यटन की तेजी से वृद्धि हुई है, यह जानने की उत्सुकता उत्पन्न हुई कि ऐसा क्या कारण है जो भारतीय पर्यटकों को वियतनाम की ओर इतना आकर्षित कर रहा है? पहले मैने सोचा था कि वियतनाम की यात्रा पूरी होने के बाद में विस्तार से वियतनाम के पर्यटन स्थलों के बारे में लिखूंगा लेकिन प्रारंभ के दो दिन के अनुभव पाठकों के साथ साझा करना मुझे उपयुक्त लगा।

इसके पहले कि हम वियतनाम के पर्यटन के बारे में चर्चा करें, यह उपयुक्त होगा कि पाठकों को वियतनाम से परिचित कराया जाए। वियतनाम भारत के दक्षिण पूर्व का छोटा सा देश है जिसकी कुल आबादी लगभग 10 करोड़ है। वियतनाम पर लगभग 1000 वर्षों तक चीन का शासन रहा। यहां पर दक्षिण वियतनाम में पूंजीवादी व्यवस्था थी और उत्तर वियतनाम में कम्युनिस्टों का शासन था। अमेरिका ने 1954 में दक्षिण वियतनाम पर आधिपत्य जमाया और उत्तरी वियतनाम के साथ युद्ध छेड़ दिया। वियतनाम ने अमेरिका के साथ 20 सालों तक लगातार युद्ध किया और अमेरिका द्वारा पूरी ताकत के बावजूद उसे 1975 में हार स्वीकार कर, वियतनाम से लौटना पड़ा। 20 वर्ष की अवधि में अमेरिका ने लगभग 57000 सैनिकों को खोया, वहीं वियतनाम के लगभग 20 लाख सैनिकों और असैनिक लोगों की मृत्यु हुई। कहा जाता है कि आज भी उत्तरी वियतनाम के अलग-अलग स्थानों पर अमेरिका द्वारा डाले गए बम मिल जाते हैं। कई बार उनके अचानक फटने से लोगों की मृत्यु हो जाती है। युद्ध की समाप्ति के बाद भी अब तक लगभग 1000 लोग इस प्रकार से अचानक अमरीकी बम फटने से मौत का शिकार हो चुके हैं।

1986 तक वियतनाम, विश्व से अलग-थलग पड़ने के कारण बहुत गरीबी से जूझता रहा। यहां की जनता को परिवार के सदस्यों की संख्या के आधार पर राशन का वितरण किया जाता था। 1991 में वियतनाम ने चीन के साथ और 1994 में अमेरिका के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित किए। सन् 2000 से वियतनाम के संबंध दुनिया के सभी देशों से स्थापित हो गए। इसके बाद ही यहां की प्रगति का रास्ता प्रारंभ हुआ। कुछ प्रतिभाशाली वियतनामियों ने अमेरिका और रूस जाकर अध्ययन किया वहां से लौट कर उन्होंने औद्योगिक प्रगति को गति दी।

वर्तमान में वियतनाम में शासन कम्युनिस्ट पार्टी का है। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के होते हुए भी सबसे शक्तिशाली व्यक्ति कम्युनिस्ट पार्टी का महासचिव है।यहां चुनाव होते अवश्य हैं, लेकिन सभी उम्मीदवार कम्युनिस्ट पार्टी के ही होते हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तब तक ही है जब तक आप सरकार की आलोचना न करें। व्यापार करने की स्वतंत्रता है और अब निजी संपत्ति बनाई जा सकती है। स्वाभिमान वियतनाम के लोगों की पहचान बन चुका है। इन्होंने गत कुछ सालों से अपने पर्यटन व्यवसाय को बढ़ाने पर बहुत अधिक ध्यान दिया है जिसमें यहां के नागरिकों का पूरा योगदान है।

वियतनाम की मुद्रा का नाम 'वी एन डी' या डोंग है। एक अमेरिकी डॉलर में लगभग 25000 डॉन्ग होते हैं एवं एक भारतीय रुपया लगभग 300 डॉन्ग के बराबर है। भारत से जाने वाले लोगों के लिए किसी भी प्रकार का सामान खरीदने के लिए हजारों-लाखों डॉन्ग की कीमत उनके लिये आश्चर्य जनक है। यहां का नारियल पानी अत्यंत ही मीठा है। एक नारियल की कीमत 35000 डॉन्ग अर्थात लगभग 120 होती है।

यह वियतनाम की सरकार और यहां के लोगों की उद्यमशीलता का ही प्रमाण है कि भारत का वस्त्र व्यवसाय जो विश्व में नंबर एक पर था उसे अब वियतनाम ने पीछे छोड़ दिया है। हालत यह है कि यदि आप अमेरिका में कोई कपड़ा खरीदें तो उस पर 'मेड इन वियतनाम' का लेबल हो सकता है।

इतने लंबे युद्ध के बावजूद वियतनाम के लोगों ने हिम्मत नहीं हारी और देश का का पुनर्विकास प्रारंभ हुआ। उत्तर और दक्षिणी वियतनाम का एकीकरण 1976 में किया गया। वियतनाम प्रारंभ से चीन और रूस के प्रभाव में रहा है। इसका असर आज भी देखने को मिलता है। वियतनाम में चुनाव होते अवश्य हैं किंतु एक ही पार्टी का शासन है और जो उम्मीदवार होते हैं वे भी उसी पार्टी के अलग-अलग धड़ों से हो सकते हैं।

यहां के लोग ट्रैफिक के नियमों की पालना सदा करते हैं। अमेरिका के साथ लंबे युद्ध का ही परिणाम है कि उनमें अनुशासन की भावना कूट-कूट कर भरी है। किसी भी व्यक्ति को हमने ट्रैफिक लाइट का उल्लंघन करते हुए नहीं देखा। शायद इसी कारण, 90 लाख के शहर में ट्रैफिक जाम हमें कभी दिखाई नहीं दिया। वियतनाम जैसे छोटे देश से भी हम यह सीख सकते हैं कि कैसे पर्यटकों के साथ अच्छा व्यवहार करके तथा सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाकर पर्यटन को तेजी से बढ़ा सकते हैं।

कुछ प्रमुख बातें जो वियतनाम के पर्यटन के बारे में पिछले दो-तीन दिनों में देखी, वे इस प्रकार हैं। वियतनाम की राजधानी हनोई को दो पहिया वाहनों का शहर कहा जा सकता है। यहां कारों की तुलना में मोटरसाइकिल / स्कूटरों की संख्या लगभग 10 गुना होगी। शहर में कहीं भी चले जाएं, हर तरफ आपको मोटरसाइकिल और स्कूटर चलाने वाले दिखाई देते हैं। शत प्रतिशत लोग हेलमेट लगाते हैं, चाहे वह पीछे बैठा बच्चा हो या कोई वृद्ध व्यक्ति।

यहां के लोग ट्रैफिक के नियमों की पालना सदा करते हैं। अमेरिका के साथ लंबे युद्ध का ही परिणाम है कि उनमें अनुशासन की भावना कूट-कूट कर भरी है। किसी भी व्यक्ति को हमने ट्रैफिक लाइट का उल्लंघन करते हुए नहीं देखा। शायद इसी कारण, 90 लाख के शहर में ट्रैफिक जाम हमें कभी दिखाई नहीं दिया।

हनोई की एक विशेषता यह लगी कि यहां पर सड़कों पर एवं हर कार्यस्थल पर पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक हैं। वियतनाम के लोग बहुत ही मेहनती हैं और देश के लिए पूरी तरह समर्पित हैं। यहां के लोगों का व्यवहार बहुत मित्रवत अनुभव हुआ। भारतीय यहां स्वयं को अधिक सहज अनुभव करते हैं। हालांकि स्थानीय भाषा वियतनामी है, जो बिल्कुल अलग तरह की है किंतु भारतीय पर्यटकों की बढ़ती संख्या के कारण कारण पर्यटन से जुड़े कुछ स्थानीय लोगों ने कुछ हिंदी के शब्द अवश्य सीख लिए हैं जैसे चलो चलो, नमस्ते, ले लो आदि। वियतनामी लोगों को हिंदी के कुछ शब्द बोलते हुए देखकर अच्छी अनुभूति होती है। हनोई से 100 किलोमीटर दूर निन बिन शहर के पास 'टैम कोक' नदी में नौका विहार किया। यह एक अविस्मरणीय अनुभव था। नावें पहाड़ों के नीचे और बीच से होते हुए चलती हैं। इस नदी पर इस गतिविधि में लगभग 500 नावें होगी, किंतु कोई आपाधापी नहीं देखी गई एवं किसी प्रकार का मोल भाव नहीं देखा गया।

भारत में जो पर्यटक आते हैं उनके साथ कई बार एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन बस स्टैंड और पर्यटन स्थलों पर दुर्व्यवहार की घटनाएं होती हैं। पर्यटकों को लूटने की मनोवृत्ति दिखाई देती है जिससे पर्यटन तो प्रभावित होता ही है, देश की छवि पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

प्रभावी नियमन व्यवस्था के कारण सब काम बिल्कुल सरलता से कुछ मिनट में हो जाता है। दरें तय हैं और नंबर से पर्यटकों को नावें आवंटित हो जाती हैं। एक नाव में दो-तीन व्यक्ति बैठ सकते हैं। नाव में बैठने से पहले हर व्यक्ति को 'लाइफ जैकेट' पहनना अनिवार्य होता है। भारत में एक से एक सुंदर स्थान हैं, किंतु मूलभूत सुरक्षा की व्यवस्था न किए जाने के कारण एवं पर्यटन विभाग द्वारा उनका सही रूप से नियमन नहीं किए जाने के कारण पर्यटक कई बार अपने आप को असहाय और ठगा सा अनुभव करता है। भारत में पर्यटन क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को वियतनाम जैसे छोटे देश से यह सीख तो लेनी ही चाहिए। इस गांव के लगभग हर परिवार का व्यक्ति नाविक के रूप में कार्य करता है और पर्यटकों को नदी में नाव पर घुमाना उनके लिए अपनी जीविका का एकमात्र आधार है।

हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि नाव चलाने वालों में 75 वर्ष तक की महिलाएं भी थीं। सारी नावें चप्पू से चलने वाली थीं। आश्चर्यजनक तो यह था कि सभी लोग हाथों के स्थान पर पांवों से चप्पू चला रहे थे। आप केवल कल्पना ही कर सकते हैं कि चप्पू से डेढ़ घंटा एक ट्रिप में नाव चलाने पर कितनी दक्षता और परिश्रम से काम करना पड़ता होगा। चार-पांच ट्रिप के लिए एक नाव चलाने वाले को लगभग 6 घंटे पांवों से चप्पू चलाना पड़ता है। यहां का साइकिल रिक्शा जयपुर के साइकिल रिक्शा की तरह है। अंतर केवल यह कि यहां रिक्शा चलाने वाला पीछे बैठता है और उसके आगे सीट पर यात्री बैठते हैं। हमने रिक्शा की सवारी भी आनंद लिया।

हनोई शहर में ट्रेन स्ट्रीट के नाम से स्थान है जहां रेल की पटरी के दोनों पर तरफ कई प्रकार की छोटी-छोटी दुकानें बनी हुई हैं, जहां पर्यटकों के बैठने की व्यवस्था की जाती है। ट्रेन उनके बिल्कुल पास से होकर गुजरती है जो अलग ही अनुभव है। जैसे ही ट्रेन आने वाली होती है लोगों को थोड़ा पीछे धकेल दिया जाता है ताकि वे ट्रेन की चपेट में न जाएं। यह अपने आप में अलग अनुभव था कि कैसे एक छोटे भीड़भाड़ वाली जगह को महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल में बदला जा सकता है।

निर्धन होने के बावजूद सड़कों की सफाई, जयपुर से बहुत अच्छी थी तथा हर जगह खुदी हुई नहीं थीं।

वियतनाम जैसे छोटे देश से भी हम यह सीख सकते हैं कि कैसे पर्यटकों के साथ अच्छा व्यवहार करके तथा सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाकर पर्यटन को तेजी से बढ़ा सकते हैं। बस, केवल सीखने की इच्छा होनी चाहिए। क्या यह इच्छा शक्ति कभी पनपेगी?

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत,
हनोई, वियतनाम से,
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

क्या इस नाम से परिचित थे आप - फ़ायटोनुट्रिएंट्स?

प्रो. वीर बहादुर सिंह

आहार या कहें भोजन तो हम सदैव सदिओं से करते आ रहे हैं, लेकिन आहार के अंदर मौजूद अवयवों की जानकारी शनैः शनैः ही प्राप्त हुई वैज्ञानिक शोधों और अन्वेषणों के उपरान्त। पूर्व के दो अथवा तीन लेखों में मैं आहार के प्रमुख अवयवों और सूक्ष्म अवयवों के बारे में जानकारी इसी अखवार के माध्यम से दे चुका हूँ

तो अब बारी है आहार के ऐसे तत्वों के बारे में जो हमें आहार में दिखते तो हैं लेकिन उनके नामकरण कब हुए और उन नामों की व्यापकता हमारे आम व्यवहार व् बोलचाल में क्यों परिलक्षित नहीं हुई? इसका सबसे नजदीकी कारण तो संभवतः आहार में उन्हें लेते समय उनकी सापेक्ष निम्नतम मात्रा ही रहा है। दूसरा कारण हो सकता है कि शरीर के स्वास्थ्य में इनसे कोई पोषण नहीं मिलता। न तो इनसे ऊर्जा मिलती है और न मांस पेशिओं व् हड्डीओं के निर्माण और रखरखाव में इनका कोई योगदान होता है। इसलिए ऐसे तत्वों को गौंण कहें तो अधिक उपयुक्त होगा। ऐसे सभी तत्व खाध में स्वाद, गंध और रंग प्रदान करते हैं। प्रकृति ने ये गुण अथवा विशेषताएं इन वनस्पतिओं को दो कारणों से प्रदान की हुई प्रतीत होती हैं। प्रथम इन्हें आकर्षण प्रदान करना ताकि प्राणी इनके उपयोग करने को आतुर हों और दूसरा कारण वनस्पति की वातावरण प्रकोपों से सुरक्षा।

अनेक वानस्पतिक रोगों के जीवाणु वातावरण में मौजूद रहते हैं और वे इन विशेषताओं के कारण वनस्पति को हानि नहीं पहुंचा पाते। रंग किसी के लिए आकर्षण होता है वहीँ कुछ अन्य के लिए विकर्षित -दूर रखना। इसी प्रकार स्वाद भी अनेक जीवों को रुचिकर नहीं लगता फलस्वरूप वे ऐसी वनस्पतिओं, पत्तों, फूलों-फलों से दूर ही रहते हैं और उस वनस्पति की इस तरह रक्षा हो जाती है, यही बात गंध पर भी लागू होती है। सभी को सभी गंधें सहज नहीं लगती इसलिए कीट आदि इन्हें नुक्सान नहीं पहुंचाते। इस प्रकार वनस्पतियां फलती-फूलती रहती हैं।

दूसरी तरफ वनस्पतिओं की यही विशेषताएं प्राणीओं को भी आकर्षित करती हैं जहाँ उपभोग के लिए आकर्षण पैदा कर मानव शरीर में अन्य पोषक तत्वों से अलग ही कार्य सम्पादित करते हैं। ये कार्य हैं शरीर में रक्त में मिलने के पश्चात् ऑक्सीडेशन से उत्पन्न विषैले पदार्थों को उत्सर्जित अथवा किसी भी प्रकार से बाहर कर देना ताकि शरीर उनके दुष्प्रभाव से सुरक्षित रह सके।

विचार करिये शरीर में अनेक और विविध चयापचय कियाएं होती रहती हैं जिनके कारण विषैले अथवा शरीर को हानि पहुँचाने वाले पदार्थ सतत बनते रह्ते हैं यदि ये पदार्थ बिना निकले शरीर में ही एकत्रित होते रहें तो शरीर निरोगी नहीं रह सकता। इनके अलावा त्वचा के स्वास्थ्य और उसकी मोहकता बनाये रखने में भी ये फ़ायटो नूट्रिएंट्स मदद करते हैं।

उपरोक्त प्राथमिक भूमिका के पश्चात् अब खाध में उपस्थित विभिन्न फायटो नुट्रिएंट्स को पाठकों को बताते हैं। अखवार में स्थान अभाव की सीमा को देखते हुए मैं केवल संक्षेप में महत्वपूर्ण फायटो नुट्रिएंट्स का ही वर्णन करूँगा। मुख्य फायोनुट्रिएंट्स इस प्रकार हैं– कैरोटेनॉयड्स, अन्थोसा नायड, कैपसेसिन, करक्यूमिन, एलॉजिक एसिड, फ्लवोनोइड्स, ग्लूकोसायनोलेट व फायटोएस्टेरोजेन्स आदि। ये सभी नुट्रिएंट्स पौधों से ही प्राप्त होते हैं और सभी सूजनरोधी होकर शरीर में प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। ये हृदय सम्बन्धी नलिकाओं के स्वास्थ्य तथा कॉग्निटिव कार्यों की देखरेख और कैंसर रोकथाम में सहायक होते हैं। कैरोटेनॉयड्स में बीटा कैरोटीन, लुटेइन, जेएक्सेंथिन और लिकोपेन सम्मिलित हैं। बीटा कैरोटीन गाजर और विभिन्न फलों से मिलती है तथा स्वतंत्र रेडिकल्स को प्रभावहीन करती है। लुटेइन और जेएक्सेंथिन, पालक, मक्का, अंडे और साइट्रस अथवा नीबू प्रजाति के फलों से मिलता है। शरीर में कोषीय रक्षा और स्वस्थ दृष्टि व् मोतियबिंद रोकथाम में कारगर है। लाइकोपेन का श्रेष्ठ स्त्रोत टमाटर है जो पौरष ग्रंथि को स्वस्थ रखने में सहायक है। एन्थोसायनिन सब्जिओं और फलों को नीला रंग देते हैं और शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट होते हैं। इनके स्त्रोत जामुन, अंगूर, सेव, पत्तागोभी और चेरी हैं। फ्लवोनोइड्स पौधों में उपस्थित वे योगिक हैं जो चाय, चॉकलेट, प्याज, पत्तेदार सब्जियां, सोया उत्पाद, फल और कुछ अन्य सब्जिओं में मिलते हैं। ये शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट और सूजन रोधी होते हैं। इनके स्त्रोत नीबू, नारंगी, काला जामुन। नीला जामुन और क्रैनबेरी में मिलते हैं।

फेनोल्स में कैफीक एसिड, फ्रोलिक एसिड आते हैं, इनके स्त्रोत सेव, नाशपाती, नीबू प्रजाति के फल, मीठी मक्का और कुछ सब्जियां हैं। ये सभी कोशकीय रक्षा को सुद्रण कर, हृदय और दृष्टि को स्वस्थ् रखते हैं। ग्लूकोसीनोलेट में आयसो थीओसायनेट और सुल्फोराफाने आते हैं जो बंद गोभी, पत्ता गोभी, ब्रोकली, मूली और अंकुरित बीजों में मिलता है। ये सशक्त कैंसर रोधी और कोशकीय सुरक्षा में हितकारी है।

फाइ -टोस्टेरॉल्स - स्टेनोल और स्टेरोल ग्रुप में आते हैं जो मक्का, सोया, वानस्पतिक तेल में मिलते हैं। ये हृदय सम्बन्धी रुकावट, को दूर कर एल डी एल को घटा देते हैं और मस्तिष्क व् दृष्टि सम्बन्धी दोषों और वृद्धावस्था में जनित अल्ज़हाइमर बीमारी को रोकते हैं। फाय-टोएस्ट्रोजन्स- इसोफ्लाविन होते हैं और सोयाबीन में प्रचुरता से पाए जाते हैं। स्वस्थ हड्डियां और मस्तिष्क व् प्रतिरोधक कार्य व् महिलाओं में मासिक सम्बन्धी स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं। ऑर्गनॉसल्फर- इसमें सल्फाइड और थिऑल आते हैं जो लहसुन, प्याज आदि में मिलते हैं और विषाक्तता को दूर कर हृदय और इम्यून हेल्थ को बल देते है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इन ऊर्जा विहीन फायटोनुट्रिएंट्स का खाध पदार्थों में अलग बृहत संसार है और स्वस्थ शरीर के लिए अनेक योगदान करते हैं। ये पदार्थ किसी भी प्रकार से मुख्य तत्वों से कामोत्तर नहीं हैं। अभी बस इतना ही।

पाठक यदि लेख को अपने लिए लाभकारी मानते हैं तो सदैव हरी, लाल, पीली, नीली, जमुनी, बैगनी रंग की सब्जियां और फलों का चयन कर खाएं और इनमे मौजूद फायटो नुट्रिएंट्स का अपने स्वास्थ्य के लिए लाभ उठायें।

–प्रो. वीर बहादुर सिंह,
खाद्य विज्ञ, पूर्व कुलपति व् अधिष्ठाता, डेरी व् खाद्य विज्ञानं, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

कैसे बचेगा राज्य वृक्ष "खेजड़ी"

राजेन्द्र जोशी

राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर और फलोदी जिलो में बनने वाले सोलर हब से ईकोसिस्टम तबाह हो रहा है।

वृक्षों की अंधाधुंध कटाई ने एक गंभीर सवाल खड़ा कर दिया है। राज्य वृक्ष खेजड़ी, जो राजस्थान की जीवन-रेखा भी कही जाती है।

रेगिस्तान में सूरज बाबा मेहरबान होने के कारण बीकानेर को सोलर हब बनाने की ताबडतोड लगी है। राजस्थान में भी अन्य प्रदेशों की तरह 70 साल पुराने कानून में परिवर्तन होता रहा है। राजस्थान में पेड़ों की सुरक्षा के लिए 1955 के टेनेंसी एक्ट मजाक बना हुआ है।

इसमें परिवर्तन करने का प्रयास किसी भी सरकार ने नहीं किया। इस कानून के तहत पेड़ काटने का भय किसी कंपनी को है ना किसी व्यक्ति को डर।

सोलर लगाने के लिए एक ही रात में हजारों-हजार खेजड़ी के हरे पेड़ काट दिए गए है। और लगातार खेजड़ी काटने का काम चल रहा है। पुलिस थाने में एफआईआर तक दर्ज नहीं हो रही। खेजड़ी काटे जाने के विरोध में धरना-प्रदर्शन भी किये जा रहे हैं। लेकिन सरकार इसे गंभीरता से नहीं ले रही।

खेजड़ी काटे जाने की खुली छूट सोलर कंपनियों को दे दी गई हैं। सोलर कंपनी के प्रतिनिधियों के मुताबिक यह सोलर बंजर भूमि पर ही लगेंगे, इसलिए पेड़ काटने होंगे।

अनुमान के मुताबिक इन चार जिलों में अब तक लगभग 26 लाख पेड़ काटे जा चुके हैं और इस गति से 38 लाख पेड़ और काटे जाने का अनुमान हैं। इनमें लगभग 60% राज्य वृक्ष खेजड़ी के पेड़ है। इसके बावजूद उत्पादन होने वाली बिजली का अतिरिक्त लाभ इन चार जिलों को नहीं मिलेगा। और ना ही इन जिलों में बिजली सस्ती होगी।

बीकानेर जिले के कालासर, बरजू एवं भानीपुरा गाँवो में एक ही रात हजारों की संख्या में खेजड़ी एवं अन्य पेड़ कट गए। यह वही राजस्थान है जहां पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के कारण अमृता देवी ने अपनी जान दे दी और उसके साथ सैकड़ो लोग शहीद हो गए थे। लेकिन वर्तमान शासन-प्रशासन के जूं तक नहीं रेंग रहीं।

तापमान बढ़ रहा है, अनेक पशु-पक्षी विलुप्त हो रहे हैं। और हजारों बीघा में पेड़ कट रहे है। कहा यह जाता है कि जो कंपनी जितने पेड़ काटेगी उतने ही पेड़ फिर से लगाएगी। व्यक्ति अथवा कोई कंपनी पेड़ काटने से राजस्थान में कतराते नहीं हैं। क्योंकि पेड़ काटा जाए तो एक बार पेड़ काटने पर मात्र 100 जुर्माना देना होता है। 100 से अधिक तो उस पेड़ की लकड़ी काटने वाले के मिल जाती है, उसके काम आ जाती है। अब तक कोई सरकार इस पर गंभीर नहीं रही है। एक तरफ सरकारे वृक्षारोपण अभियान चला रही है। और बच्चों को पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता है कि जितने अधिक पेड़ लगेंगे उतनी अधिक बरसात अधिक होगी।

यह परिस्थिति केवल पर्यावरणीय असंतुलन का संकेत नहीं है, बल्कि आने वाले समय में वर्षा चक्र और जलवायु पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। सौर ऊर्जा और वृक्षों की बलि सौर ऊर्जा भविष्य की स्वच्छ ऊर्जा कही जाती है। राजस्थान का यह मरुस्थलीय भूभाग सूर्य की तीव्र रोशनी के कारण इस क्षेत्र में सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए बेहद उपयुक्त है।

सोलर हब बने इससे परहेज नहीं है। लेकिन एक अनुमान के मुताबिक 45 हजार बीघा में सोलर लगने से एक बीघा में 1-2 खेजड़ी कटने से लगभग 90 हजार खेजड़ी कटेगी।

राजस्थान वर्षों से खेजड़ी के पेड़ को बचाने के लिए प्रयासरत रहा है। बिश्नोई समाज इसके लिए संघर्ष करता रहा है। अनेक बार बिश्नोई समाज ने इसके लिए जन आन्दोलन किए है। सर्व समाज मेहनत करता रहा है, खेजड़ी राजस्थान का राज्य वृक्ष भी है।

यह कैसा विकास जो विनाश करता है। माना की विकास जरूरी है, लेकिन विनाश करते हुए विकास कैसा परिणाम देगा।

खेजड़ी केवल एक पेड़ नहीं, बल्कि राजस्थान के सांस्कृतिक और पर्यावरणीय संतुलन का प्रतीक है। परंपरा और चेतावनी राजस्थान का लोकजीवन सैकड़ों वर्षों से पेड़ों, विशेषकर खेजड़ी, को पूजनीय मानकर उसकी रक्षा करता आया है। आज वही पेड़ विकास की अंधी दौड़ में काटे जा रहे हैं। यह केवल परंपरा के प्रति अनादर नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए चेतावनी है कि अगर वृक्षों का संरक्षण नहीं हुआ तो प्रकृति नाराज होगी और वर्षा का चक्र अनिश्चित बन जाएगा।

पेड़ों के साथ-साथ लाखों की संख्या में झाड़ियां भी काटी जा रही है, यह जंगली झाड़िया अनेक प्रकार के फल भी देती है। उदाहरण के लिए केर एवं बोरिया, केर जिसका अचार डालते हैं वह केर अब कहां से लेंगे, अगर मिलेंगे तो उनके दाम इतने अधिक होंगे कि हर व्यक्ति के लिए खरीद पाना मुश्किल होगा। इन झाड़ियां और पेड़ों में पक्षियों के घोसले अब कैसे बनेंगे।

पक्षी ही नहीं बचेंगे।

खेजड़ी की छाल से मधुमेह को नियंत्रित करने वाली औषधि बनाई जाती है। और इसकी पत्तियों व फलों में एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। इसकी पत्तियों को पशुओं के चारे के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। खेजड़ी काटने से इस क्षेत्र में पशुओं के चारे का संकट खड़ा हो गया है। इसके अलावा, खेजड़ी की फलियाँ सांगरी सब्जी के रूप में खाई जाती हैं। खेजड़ी और झाड़ियां काटने से मरुस्थल की औषधि में कमी तो आई है साथ ही साथ आयुर्वेदिक इलाज पर भी प्रभाव पड़ेगा

यह सब इसलिए हो रहा है कि एक तरफ तो सरकार अपनी जमीन सोलर कंपनियों को उपलब्ध करा रही है। दूसरी और निजी क्षेत्र की जमीन है, यह सब जानते हुए भी किराए पर देकर ऊंची रकम प्राप्त करने के लिए हो रहा है। ऐसे में इसके लिए सरकार और समाज दोनों ही बराबर के भागीदार हैं। समय रहते इस पर विचार नहीं किया गया तो स्थितियां बहुत भयावह होने वाली है। चिंता यही है कि ऐसी परिस्थिति में इस क्षेत्र की खेजड़ी कैसे बची रहेंगी।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद-साहित्यकार

वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में रैली निकाली

अजमेर, (कासं)। राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में सोमवार को राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। बोर्ड कर्मचारियों ने पूरे शहर में वाहन रैली निकाली, तिरंगा लहराया और कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

जानकारी के अनुसार वंदे मातरम् गीत की रचना के 150 वर्ष पूरे होने पर सोमवार को राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अधिकारियों और कार्मिकों ने रैली निकाली। रैली रीट कार्यालय से रवाना होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए वैशाली नगर, मित्तल हॉस्पीटल, पुष्कर रोड़ होते हुए बजरंग गढ़ स्थित शहीद स्मारक पहुंची। रैली यहां से बोर्ड के जयपुर रोड़ स्थित कार्यालय आई, जहां भव्य स्वागत किया गया। रैली के दौरान विद्यार्थियों ने देशभक्ति नारों से वातावरण गुंजायमान कर दिया। बोर्ड परिसर रंगोली और राष्ट्रीय रंगों से सजा हुआ नजर आया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं बोर्ड सचिव गजेन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि वंदे मातरम् केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारत की आत्मा और स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरक शक्ति है। यह गीत राष्ट्रप्रेम, एकता और नारी शक्ति के आदर्श का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि इस गीत ने देश की आज़ादी की लड़ाई में असंख्य देशभक्तों को प्रेरित किया और आज भी यह उतना ही प्रासंगिक है जितना स्वतंत्रता संग्राम के समय था।

राठौड़ ने कहा कि युवाओं को चाहिए कि वे अपने इतिहास और संस्कृति से जुड़े रहें, क्योंकि राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य उसकी युवा पीढ़ी के संकल्प और समर्पण पर निर्भर करता है। उन्होंने प्रतिभागियों को देशभक्ति की भावना को जीवन में आत्मसात करने का संदेश दिया और विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन नई पीढ़ी को अपने इतिहास, संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम के महान बलिदानों से जोड़ते हैं। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी और युवाओं से अपील की कि वे अपने जीवन में देशभक्ति और समाज सेवा की भावना को आगे बढ़ाएं।

अजमेर में मा. शि. बोर्ड अधिकारियों और कार्मिकों ने वाहन रैली निकाली।

कार्यक्रम के तहत रंगोली और गायन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। अंत में प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। बोर्ड परिसर देशभक्ति के रंगों से सराबोर हो उठा और वातावरण वंदे मातरम् की गूंज से मुखरित रहा। कार्यक्रम के समापन पर उपस्थित सभी ने राष्ट्रगीत वंदे मातरम् का सामूहिक गायन किया और देश के प्रति समर्पण की शपथ ली। इस अवसर पर विशेषाधिकारी नीतू यादव, वित्तीय सलाहकार रश्मि बिस्सा, राजेश निर्वाण, राजीव चतुर्वेदी, कर्मचारी संघ अध्यक्ष मोहन सिंह रावत, महामंत्री करण सिंह यादव, उपाध्यक्ष हर्ष खत्री, अनिकेत महावर, उम्मेद गहलोत, अमरजीत सिंह, महिला कर्मचारी रेखा गहलोत, आशा हाड़ा, सुमन टेकचंदानी, नीतू जैन, सीमा चौपड़ा, शशि भारद्वाज, शिखा शर्मा, जसोदा, वीना आदि उपस्थित रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 11 नवम्बर, 2025

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, पुष्य नक्षत्र सायं 6:18 तक, शुभ योग प्रातः 9:44 तक, विष्टि करण दिन 11:34 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-वृश्चिक, बुध-वृश्चिक, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से सायं 6:18 तक है। रवियोग सायं 6:18 तक रहेगा। सर्वार्थ सिद्धि योग सायं 6:18 से सूर्योदय तक रहेगा। भद्रा दिन 11:39 तक रहेगी। गुरू वक्री रात्रि 10:15 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:26 से 10:48 तक, लाभ-अमृत 10:48 से 1:32 तक, शुभ 2:53 से 4:13 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:47, सूर्यास्त 5:34 तक

मेष
घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी और महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों में परिजनों से सहयोग मिल सकता है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आर्थिक विवादों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

सिंह
पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। महत्वपूर्ण कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

वृश्चिक